1. फाह्यान कौन थे ? वे नालंदा कब आए थे ?

Answer: **फाह्यान एक चीनी बौद्ध भिक्षु, यात्री और अनुवादक थे, जो भारत में बौद्ध ग्रंथों की खोज में आए थे। वह 5वीं शताब्दी ईस्वी में नालंदा आए थे।**

---

2. शिवपूजन सहाय की किन्हीं दो रचनाओं के नाम लिखें ।

Answer: **शिवपूजन सहाय की दो रचनाएँ 'देहाती दुनिया' और 'विभूति' हैं।**

---

3. लेखक शिवपूजन सहाय ने भगजोगनी नाम ही क्यों रख

Answer: **यह एक वैचारिक प्रश्न है जिसका उत्तर पाठ के संदर्भ पर निर्भर करता है, लेकिन यह नाम संभवत: कहानी के मुख्य पात्र के जीवन की परिस्थितियों और संघर्षों को दर्शाने के लिए चुना गया था।**

---

4. राजेंद्र प्रसाद के पिता का नाम क्या था और वे किसके

Answer: **यह एक वैचारिक प्रश्न है जिसका उत्तर पाठ के संदर्भ पर निर्भर करता है, लेकिन राजेंद्र प्रसाद के पिता का नाम महादेव सहाय था।**

5. ग्राम-गीत की प्रकृति क्या है ?

Answer: **ग्राम-गीत की प्रकृति सहज, सरल और लोक-जीवन से जुड़ी होती है, जो ग्रामीण संस्कृति और भावनाओं को व्यक्त करती है।**

---

6. ग्राम-गीत की कौन-सी प्रवृत्ति अब काव्य-गीत में भी चलने

Answer: **ग्राम-गीतों की सहजता, सरलता और लोक-भावनाओं की अभिव्यक्ति की प्रवृत्ति अब आधुनिक काव्य-गीतों में भी दिखाई देती है।**

---

7. बिहार के किन्हीं दो रचनाकारों के नाम लिखें ।

Answer: **बिहार के दो प्रमुख रचनाकार आचार्य शिवपूजन सहाय और रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं।**

---

8. भित्ति चित्र किसे कहते हैं ?

Answer: **भित्ति चित्र दीवार या किसी समतल सतह पर बनाए गए चित्रों को कहते हैं, जो अक्सर धार्मिक या सामाजिक विषयों पर आधारित होते हैं।**

9. पटना कलम क्या है ? संक्षिप्त परिचय दीजिए.

Answer: **पटना कलम (या पटना शैली) 18वीं और 19वीं शताब्दी के दौरान बिहार में विकसित लघु चित्रों की एक अनूठी शैली है, जो आम लोगों के दैनिक जीवन को दर्शाती है।**

10. श्याम शर्मा द्वारा किस शीर्षक से एक चित्र श्रृंखला बनाई

Answer: **'महाभारत'**

श्याम शर्मा ने अपनी चित्र श्रृंखला 'महाभारत' शीर्षक से बनाई।

21. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखें

यह एक वैचारिक गृहकार्य समस्या है जिसके लिए छात्रों को दिए गए विषयों में से किसी एक पर निबंध लिखना आवश्यक है।

देशप्रेम

Answer: देशप्रेम पर निबंध

- देशप्रेम का अर्थ है अपने देश के प्रति प्रेम और वफादारी की भावना।
- यह भावना लोगों को देश की भलाई और सुरक्षा के लिए काम करने के लिए प्रेरित करती है।
- देशभक्त नागरिक अपने देश की संस्कृति, इतिहास और मूल्यों का सम्मान करते हैं।
- यह एक महत्वपूर्ण गुण है जो देश की एकता और प्रगति में योगदान देता है।

23. Ans-

छात्र: नमस्ते गुरुजी।

शिक्षक: नमस्ते बेटा, कहो कैसे आना हुआ?

छात्र: गुरुजी, मैं हिन्दी भाषा के महत्त्व के बारे में कुछ जानना चाहता था। आजकल कई लोग कहते हैं कि अंग्रेजी ज्यादा महत्वपूर्ण है।

शिक्षक: बैठो, मैं तुम्हें समझाता हूँ। देखो, हर भाषा का अपना महत्त्व होता है, लेकिन हिन्दी हमारे देश की पहचान है। यह हमें अपनी जड़ों से जोड़ती है।

छात्र: हाँ गुरुजी, मैंने भी महसूस किया है कि हिन्दी में बात करने से एक अपनत्व का भाव आता है।

शिक्षक: बिल्कुल! हिन्दी भारत की विविध संस्कृतियों को एक सूत्र में पिरोती है, यह एक सेतु का काम करती है। इसके माध्यम से हम अपने इतिहास, साहित्य और परंपराओं को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं।

छात्र: यह तो बहुत सही बात है। लेकिन क्या यह नौकरी के अवसरों में भी सहायक है?

शिक्षक: अवश्य। भारत में प्रभावी संचार और समुदाय निर्माण में हिन्दी का महत्त्व सोशल मीडिया और अन्य क्षेत्रों में भी स्पष्ट दिखाई देता है। सरकारी और निजी, दोनों क्षेत्रों में हिन्दी का ज्ञान बहुत ज़रूरी है।

छात्र: अब मैं समझ गया हूँ, गुरुजी। हिन्दी सीखना और उसमें संवाद करना कितना ज़रूरी है।

शिक्षक: शाबाश! भाषा शिक्षण का मूल उद्देश्य व्यावहारिक ज्ञान और सृजनात्मकता का विकास करना है, जो हिन्दी के माध्यम से बखूबी होता है।

छात्र: धन्यवाद गुरुजी, आपने मेरे सारे संदेह दूर कर दिए।

शिक्षक: हमेशा खुश रहो और हिन्दी का सम्मान करो।

24. करण कारक और अपादान कारक में अंतर स्पष्ट करें

Answer: **करण कारक और अपादान कारक में मुख्य अंतर अलगाव (separation) का है।**

- करण कारक (Karan Karak) उस साधन या माध्यम को इंगित करता है जिससे क्रिया संपन्न होती है। इसका विभक्ति चिह्न 'से' या 'के द्वारा' होता है, जो जुड़ाव या सहायता का भाव प्रकट करता है।
    - उदाहरण: "वह **कलम से** लिखता है।" (कलम लिखने का साधन है, जुड़ा हुआ है)।

- अपादान कारक (Apadaan Karak) उस बिंदु को इंगित करता है जिससे कोई वस्तु अलग होती है। इसका भी विभक्ति चिह्न 'से' होता है, लेकिन यह अलगाव (separation) का भाव प्रकट करता है।
    - उदाहरण: "**पेड़ से** पत्ते गिरते हैं।" (पत्ते पेड़ से अलग हो रहे हैं)।

26. सप्रसंग व्याख्या

उत्तर: **(क) कवयित्री अपने क्षणभंगुर अस्तित्व और स्थायी पहचान की कमी का वर्णन करती है, स्वयं की तुलना एक क्षणिक वर्षा बादल से करती है।**

पंक्तियाँ "परिचय इतना इतिहास यही, वृश्चिक कल थी मिट आज चली !" प्रसिद्ध हिंदी कवयित्री महादेवी वर्मा की कविता "मैं नीर भरी दुख की बदली" (मैं नीर भरी दुख की बदली) से हैं। इस कविता का मुख्य विचार मानव जीवन और अस्तित्व की क्षणभंगुर और अल्पकालिक प्रकृति है, विशेष रूप से कवयित्री के स्वयं के जीवन की, जिसकी तुलना वह बारिश के बादल या ओस की बूंद से करती है।

- **(प्रसंग - संदर्भ):** ये पंक्तियाँ कवयित्री के क्षणभंगुर जीवन का वर्णन करती हैं, जो बादल की तरह विशाल आकाश में कोई स्थायी स्थान नहीं रखता।
- **व्याख्या (Vyakhya - Explanation):** कवयित्री कहती हैं कि उनका एकमात्र परिचय और इतिहास यही है कि वे कल बादल की तरह प्रकट हुईं और आज लुप्त हो गईं। यह उसके अस्तित्व की क्षणभंगुर प्रकृति और दुनिया में एक स्थायी पहचान या घर के अभाव पर जोर देता है।
- **भाव (भावना):** कविता मुख्य रूप से करुण रस (करुणा) में है।
- **अर्थ:** कवयित्री करुणा और दुःख से भरी हुई है, और स्वयं की तुलना दुःख से भरे वर्षा बादल से करती है जो प्रकट होता है और जल्दी से गायब हो जाता है, कोई स्थायी निशान नहीं छोड़ता।